



इंद्राक्ष के पद





रैदास का जीवन परिचय - Biography of Raidas

संत रैदास कबीर के समकालीन थे और काशी के निवासी थे उनका जन्म 1388 ई० में और मृत्यु 1518 ई० में हुआ। यह माना जाता है कि वे 15 वीं सदी में विद्यमान थे। वे उच्च कोटि के संत थे उनकी अपार लोकप्रियता विलक्षण ज्ञान और व्यापक प्रभाव के बारे में अनेक बातें प्रचलित हैं। संत रैदास उत्कृष्ट साधना जीवनशैली तथा सदाचरण के कारण आज भी भारतीय धर्म साधना के इतिहास में श्रद्धा के साथ याद किए जाते हैं। उनके काव्य में गुरु भक्ति, नाम स्मरण, प्रेम, कर्तव्य पालन तथा सत्संग का महत्व मिलता है। रैदास की रचनाओं की मूल भाषा ब्रज तथा कहीं-कहीं अवधी, राजस्थानी आदि का पुट भी उसमें देखने को मिलता है। रैदास ने पदों और साखियों की रचना की है। उनके पद गुरु ग्रंथ साहिब में संग्रहित हैं। रैदास की वाणी, रैदास के पद, नाम से उनकी वाणी के अनेक संग्रह तैयार किए गए हैं परंतु रैदास की रचनाओं का पूरा प्रमाणित संग्रह अभी तक उपलब्ध नहीं है।

पद

(1)

अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी।
प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी, जाकी अँग-अँग बास समानी।
प्रभु जी, तुम घन बन हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा।
प्रभु जी, तुम दीपक हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती।
प्रभु जी, तुम मोती हम धागा, जैसे सोनहिं मिलत सुहागा।
प्रभु जी, तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भक्ति करै रैदासा॥

व्याख्या

रैदास निर्गुण परंपरा के कवि हैं। यहां रैदास के दो पद दिए गए हैं। पहले पद में प्रभु जी तुम चंदन हम पानी में कवि अपने आराध्य को याद करते हुए उनसे अपनी अपनी तुलना करता है। उसका प्रभु बाहर कहीं किसी मंदिर या मस्जिद में नहीं मनुष्य के अपने अंतःकरण में विद्यमान रहता है। वह हर हाल में हर काल में उसे श्रेष्ठ और सर्वगुण संपन्न है इसलिए तो कवि को उन जैसा बनने की प्रेरणा मिलती है।

शब्द—अर्थ

लगन —रट

बस— सुगंध

मेरा— मेरा

थचतवत— देखना

चंद —चंद्रमा

ज्योति —प्रकाष

घन— वन गहरा

ज्योति बरै— जलती रहती है

सोनहिं —सोने में

घन —बादल

(2)

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै।
गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छत्रु धरै ॥
जाकी छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै।
नीचहु ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै॥
नामदेव कबीरु तिलोचनु सधना सैनु तरै।
कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरिजीउ ते सभै सरै॥

व्याख्या

दूसरे पद में कवि ने भगवान की अपार उदारता कृष्ण कृपा और उनके मर्मस्पर्शी स्वभाव का वर्णन किया है रैदास कहते हैं कि भगवान ने तथाकथित निम्न उनके भक्तों को भी सहज भाव से अपनाया है उन्हें लोक में सम्माननीय स्थान दिया है

शब्द—अर्थ

लल— स्वामी

गरीब निवाजु —दीन दुखियों पर दया करने
वाला

गुसईआ —स्वामी

माथे छत्रु धरे— मस्तक पर सोने का मुकुट
धारण करता है

नीचहु उच्च करै —नीच को भी ऊँची पदवी
प्रदान करता है ।

नामदेव— महाराष्ट्र के एक प्रसिद्ध संत कवि
है ।

संत रविदास जी के दोहे



“मन चंगा तो
कठौती में
गंगा”